बम

आज शहर की सबसे महत्वपूर्ण इमारत यानी कि सचिवालय में हंगामा मचा हुआ था। लोग घबराकर परिसर से बाहर निकल रहे थे और चारों ओर एक ही चर्चा थी, गृह सचिव महोदय के बाथरूम में जिन्दा बम होने की।

हुआ ये कि अर्दली कैलाश गृह सचिव महोदय के कमरे की सफाई के लिये पहुँचा। 8 बजे का समय होगा। चूँकि शनिवार – इतवार को सचिव दौरे पर थे अतः काफी धूल जमी हुई थी। और 'धूल'!! भइया धूल से तो साहब को सख्त नफरत है। ऊ का कहते हैं 'इलर्जी' है अजी धूल का नाम सुनते ही छींकने लगते हैं। कैलाश चार साल से उनका बड़ा ही विश्वसनीय व मुँह लगा अर्दली था। पहले खाद्य में थे तब भी इन्हीं के साथ था, जब गृह में आये, साथ ही चला आया। अपने साहब के किस्से वो बड़ी शान से मजे ले लेकर सुनाता था। कहता था अपने साहब तो खासम खास हैं। मजाल कि कोई मिठाई का डिब्बा तक ले आये। एक बार बड़ा मज्जा आया कोनो सिफारिशी अपनी पत्नी के साथ साहब के बँगले पर मिठाई के डिब्बे लेकर पहुँच गये। साहब की तो त्यौरियाँ चढ़ गयीं परन्तु अपने साहब महिलाओं की बड़ी इज्जत करते हैं सो बड़ी विनम्रता से बोले, "ये मिठाई आप वापस ले जायें हम मिठाई नहीं खाते"।

"पर साब आपके लिये नहीं, बच्चों के लिये लाये हैं कृपया इसे रखवा दें"।

"नहीं भाई हमारे बच्चे भी नहीं खाते", साहब का बोलना था कि अन्दर से साहब के छोटे 3 साल के बचुआ बोले, "मैं तो खाता हूँ"। बिचारे बचुआ को मिठाई बड़ी नीक लगत रही उ को लगा मिठाई तो गई ऊ बेचारे का का मालूम था सो ऊ महाशय तो अड़ गये बोले "हैं–हैं देखिये बच्चे के लिये ही तो लाये हैं"। पर अपने साहब ने मिठाई लौटा दी और फिर जाकर बचुआ के लिये अपने आप मिठाई खरीद के लाये।

खैर साहब का वो पक्का मुरीद था। कब साहब चाय पियेंगे, कब मट्ठा, सब समय पर हाजिर कर देता। कहता कि अपने साब लैन्च तो करते नहीं और बगैर चुपरी रोटी खाते हैं, का करें भइया दिमाग का काम करते हैं सावधानी जरूरी है।

कमरा साफ करने में काफी समय लग गया, साढ़े आठ बजने लगे। बँगले से साहब को लेने गाड़ी में जाना था, सो बाथरूम के लिये वो माँगेलाल को पकड़ लाया बोला, "चचा इ बाथरूम तनिक अच्छे से साफ कर दो हम साहब को लेने जा रहा हूँ ड्राईवर के साथ, बस आधा पौने घंटे में लौट आयेंगे"।

माँगेलाल ने पहले तो तम्बाकू का गुटका जीभ के नीचे दबाया। झाड़ू और फिनायल लेकर बाथरूम साफ करने घुसा। अजीब सी महक आ रही थी। उसने झाड़ू लगानी शुरू की, अचानक उसकी नजर वाशबेसिन के नीचे रखी चमकीली फायल के थैले पर गयी, वो धक–धक हिल रही थी और एक गोल सा उसमें रखा था। उसके दिमाग में बिजली सी कौंधी 'कहीं ये बम तो नाहीं पर बम कइसे हो सकता है साहब का सिक्यूरिटी तो चौकस है। पर इ हिल क्यों रहा है? बाबा इ तो बम ही होगा। लगता है अपने गृह सचिव को मारने की साजिश है। कोनो दुसमन आकर चुपचाप बम रख गया, ऊ खिड़की भी खुली है, दुई दिन जो छुट्टी रहिन, तभी किसी देशद्रोही ने ये कारनामा किया है। सोचा होगा साहब उल्टी सीधी सिफारिश तो मानते नहीं तो उड़ा ही दो इन्हें।'

माँगेलाल में भक्ति भावना एवं कर्त्तव्यबोध हिलोरें मारने लगा। अपने साहब का बाल बाँका भी न होने देगा वो। चिल्लाता हुआ नीचे भागा। सुबह के साढ़े आठ बजे थे दो दिन बाद ऑफिस खुला था सो सब सफाई व अन्य कर्मचारी काम में लगे थे। माँगेलाल का चिल्लाना सुनकर वे बाहर पार्क में जमा होने शुरू हो गए। माँगेलाल हाँफते हुए बोला, ''गृह सचिव साहब के बाथरूम में बम है, जिन्दा बम, हम अपनी आँखों से देखे हैं।'

सबका मुँह खुला का खुला रह गया अरे इतनी जबरदस्त सुरक्षा के बीच भी कोई बम रख गया। बताओ जहाँ गृह सचिव सुरक्षित नहीं वहाँ कौन सुरक्षित होगा। सारा पुलिस विभाग उनके आगे पीछे घूमता है, आने वाले सभी लोगों

की तलाशी ली जाती है। फिर भी, क्या होगा अपने देश का! और तो और अपने मुख्यमंत्री भी तो इसी इमारत में बैठते हैं।

खबर आग की तरह फैल गयी, सिक्यूरिटी सतर्क हो गयी। सब अफसरान को बाहर ही रोक दिया गया। बम निरोधक दस्ते को खबर कर दी गयी। कन्ट्रोल रूम से हर मिनट की खबर मुख्यमन्त्री कार्यालय को दी जाने लगी। प्रेस और मीडिया को भी भनक लग गयी वे भी टिड्डी दल की भाँति जमा होने लगे। बेचारे गृह सचिव गेट के बाहर ज्यों ही अपनी गाड़ी से उतरे सबने अपने कैमरों के साथ उन पर आक्रमण कर दिया और प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

"सचिव महोदय हमें पहले बताइये, हम पहुँचे थे सबसे पहले यहाँ कि कौन हो सकता है आपका दुश्मन?"

"नहीं साहब आप हमें पहले बताइये हमारा सबसे तेज चैनल है, कि इस बम को रखने में किस आंतकवादी संस्था का हाथ हो सकता है, कृपया बताइये कि आपको खत्म कर वे प्रदेश को क्या संदेश देना चाहते हैं?"

सचिव साहब कुछ कह पाते इससे पहले ही एक चैनल के रिपोर्टर ने उनके मुँह के सामने अपना माइक रख दिया और पूछा, "आपके बाथरूम में जिन्दा बम रखा है कैसा लग रहा है आपको?"

इतनी टेंशन में भी सचिव साहब को हँसी आ गयी बोले, "Oh I am feeling at the top of the world. बताइये किसे अच्छा नहीं लगेगा अपने बाथरूम में बम का मिलना।"

तभी सिक्यूरिटी वालों ने गृह सचिव साहब को घेर लिया और अन्दर परिसर में ले गये।

बम निरोधक दस्ता आ पहुँचा, स्ट्रेटेजिकल पोजिशन ली जाने लगी, तभी कैलाश जो अभी–अभी पँहुचा था माँगेलाल के पास पहुँचा, माँगेलाल हीरो

बना हुआ था, फर्स्ट हैण्ड इन्फारमेशन जो थी उस के पास। उसे बाहर नहीं जाने दिया गया वरना सारे चैनलों पर आज मॉंगेलाल हीरो बन जाता। कितनी दिलेरी से और अपने दिमाग को संयत रखते हए उसने अपने साहब की जान बचाई।

खैर कैलाश ने पूछा, "चाचा, बाथरूम में बम कइसा लगता था?"
"अरे जैसा बम होता है वैइसा ही लगता था, गोल–गोल रहा और हिलत रहा कोनो आवाज भी आ रही थी", मॉंगेलाल ने जानकारी दी।

"कहाँ रखा था, काहे में रखा था बताआ तो", कैलाश को पता नहीं क्यों शंका हो रही थी।

"भई वो चाँदी जैसी फायल होती है न उसी में रखा था बम। हम जरा से ऊ मा झाँके तो हरा सा गोला रहा जो आवाज के साथ हिलत भी रहा", मॉंगेलाल ने पूरी जानकारी दी।

कैलाश का सर घूमने लगा पूछा, "तो का चिलमची (वाशबेसिन) के नीचे रहा?"
"अरे तुमको कइसे मालूम?" अचकचाकर मॉंगेलाल ने उसकी ओर ताका।

"चचा गजब कर दिये तुम तो" कहकर कैलाश बिल्डिंग की ओर भागा। बम निरोधक दस्ता ऊपर पहुँच चुका था, गृह सचिव के कमरे के बाहर खड़े होकर सलाह मशविरा किया जा रहा था कि तीर की तरह कैलाश कमरे में घुसा और जिन्दा बम को उठाकर भागा। अरे पकड़ो इसे ! पागल हो गया है क्या? मरेगा क्या? सिक्यूरिटी वाले चिल्लाये

इससे पहले कोई उसे पकड़ पाता उसने कूड़ा फेंकने वाले मोकले (शूटर) में वो थैला फैंक दिया। हाथ जोड़कर बोला, "साब हमसे बड़ भूल हो गयी हमका माफी दे दो, हमारी बजह से सब ये तमासा हुआ।"

तब तक कई लोग वहाँ पहुँच चुके थे कैलाश ने सफाई दी, “वो हमारे साब लैन्च नहीं करते ना बस लैन्च में 1 दर्जन केला खाते हैं। मेमसाब ने सुकरवार को साहब के लिये चमकीली फायल के थैले में 12 केले और दही भेजी थी। साहब जब खा चुके तो हमने हरे कागज में छिलके बाँध कर उसी फायल में रख कर चिलमची के नीचे रख दिया कि जाते समय फेंक देंगे परन्तु साहब को दौरे पर जाना था सो जल्दी में भुला गये उसमें सुसरी चूहिया पता नहीं कहाँ से घुस गयी और उछल कूद मचाने लगी तो चचा समझे जिन्दा बम हाय”। उसका गोल होता मुँह, और फटी आँखे देखकर सिक्यूरिटि, और आफिस के लोगों का हँसते–हँसते बुरा हाल हो गया।

बाहर टी0 वी0 और आकाशवाणी के कारिन्दे पोजिशन लेकर खड़े थे और घोषणा कर रहे थे कि गृह सचिव के बाथरूम में बम की मिनट दर मिनट जानकारी आप तक सबसे पहले उनका ही चैनल पहुँचायेगा।

*****